Chapter 2

bihar board class 9 Geography Notes – संरचना एवं महत्त्व

भौतिक स्वरूप : संरचना एवं महत्त्व

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

विशाल आकार होने के कारण हमारे देश के भौतिक स्वरूप में बहुत विविधता पाई जाती है। इस भौतिक स्वरूप के रूप-रेखा को तैयार होने में करोड़ों वर्ष लगे हैं, भारत के भौतिक स्वरूप के निर्माण की प्रक्रिया को बताने में अधिकतर भूगर्भशास्त्रियों ने "प्लेट-विवर्ततनिक" सिद्धांत पर सहमति दी है जिसके अनुसार सम्पूर्ण भू-पर्पटी कई प्लेटों में विभाजित है, जिसका हिस्सा प्रायद्वीपीय पठार है। सामान्य तौर पर इन प्लेटों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। कुछ प्लेटें एक-दूसरे के करीब आती हैं और विनाशी प्लेट सीमान्त का निर्माण करती है।
एक-दूसरे से दूर जाती हैं तो निर्माणक प्लेट सीमान्त का निर्माण करती हैं। जब दो प्लेट एक-दूसर से दूर जाती है तथा एक दूसरे के विपरीत दिशा में जाती हुई एक-दूसरे को रगड़ती हैं तो उस संरक्षी प्लेट सीमान्त कहते हैं। भारत का सम्पूर्ण क्षेत्रफल विभिन्न भागों में विभाजित है। इसका
11% भाग पर्वतीय, 28% भाग पठारी, 18% पहाड़ी और 43% भू-भाग मैदानी है। पहाड़ी एवं पठारी भाग की औसत ऊँचाई 300-900 मीटर के बीच है तथा मैदान एवं तटीय क्षेत्र की औसत ऊंचाई 160 मीटर से भी कम है। झीलों के निक्षेपित होने से वृहद हिमालय में कई घाटियों का निर्माण हुआ है। उत्तर की उच्च भूमि के मध्य में 1000 मीटर से भी अधिक गहरी गार्ज पाई जाती है। यह दक्षिण की ओर चाप बनाते हुए उत्तर-पूर्व की ओर चली जाती है जहाँ ये पटकोई, नागा, मणिपुर तथा लुसाई के नाम से विख्यात है। हिमालय क्षेत्र में कई छोटी-बड़ी हिमानियाँ मिलती हैं
जिनमें गंगोत्री, यमुनोत्री, सियाचीन, बाल्टोरा, निआको तथा बतूरा प्रमुख हैं। यहाँ कई प्रसिद्ध दर्रे भी हैं जिनमें जोजिला बुर्जिल, लाचला, शिपकिला, थागला, नाथुला, जालेपला दर्रे आदि प्रमुख हैं। उत्तरी पर्वतीय भाग के दक्षिण का विशाल समतल भू-भाग गंगा-सिन्धु एवं ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के तलछटों के निक्षेप से बना है। दक्षिण के पठार के पूर्वी और पश्चिमी किनारे पर तटीय मैदानों का विकास हुआ है। उत्तर के विशाल मैदान के उत्तर-पश्चिम में शुष्क प्रदेश है जो राजस्थान की मरुभूमि कहलाती है जो थार मरुस्थल का एक भाग है।
सामान्य तौर पर भारत को छः भौतिक विभागों में बाटते हैं-प्रथम भाग में हिमालय की पर्वत
श्रेणी है जो भारत की उत्तरी सीमा पर फैली है। ये पर्वत श्रृंखलाएँ पश्चिम से पूर्व दिशा में सिंधु और ब्रह्मपुत्र के बीच करीब 2500 कि० मी० की लम्बाई में अर्द्धवृत्त के रूप में फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल लगभग 5 लाख वर्ग कि. मी. है। इसकी चौड़ाई कश्मीर में 500 कि० मी० एवं
अरुणाचल में मात्र 160 कि. मी. है। पश्चिम भाग की अपेक्षा पूर्वी भाग की ऊँचाई में अधिक विविधता है तथा इसकी तीन समानान्तर श्रृंखलाएँ हैं। सबसे उत्तरी भाग में स्थित श्रृंखला को महान या आंतरिक हिमालय या हिमाद्रि कहते हैं। महान हिमालय के समानान्तर दक्षिण में स्थित श्रृंखला को लघु हिमालय अथवा मध्य हिमालय कहते हैं। हिमालय के सबसे दक्षिणी श्रृंखला को बाहरी हिमालय, उप हिमालय अथवा शिवालिक कहते हैं।
द्वितीय भाग में हिमालय पर्वत के दक्षिण और दक्षिणी पठार के उत्तर तीन प्रमुख नदी प्रणालियों और उसकी सहायक नदियों से बना विशाल मैदान अर्थात् सिन्धु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान आता है। इस विशाल के मोटे तौर पर चारे उप-भाग हैं-सिन्धु और इसकी सहायक नदियों के द्वारा बना भाग पश्चिमी मैदान या पंजाब का मैदान कहते हैं। विशाल मैदान का दूसरा भाग राजस्थान का मैदान कहलाता है। बालुका स्तूप इसकी प्रमुख कलाकृति है। विशाल मैदान का तीसरा भाग यमुना नदी से लेकर पूर्व में बंग्लादेश की पश्चिमी सीमा तक फैले मैदान को मध्यवर्तीय मैदान या गंगा का मैदान कहते हैं। इस विस्तृत मैदान को तीन उपभागों में बाँटा गया है। ऊपरी गंगा का मैदान, मध्यवर्ती गंगा का मैदान तथा निचली गंगा का मैदान, विशाल मैदान का चौथा तथा अंतिमभाग है-ब्रह्मपुत्र का

https://www.evidyarthi.in/

मैदान।
तृतीय भाग में दक्षिण का पठार प्राचीन गोंडवाना भूमि का अंश है। इसकी औसत ऊँचाई 600-900 मीटर है। इसे दो भागों में बाँटा गया है-मध्य उच्चभूमि तथा दक्कन का पठार । चतुर्थ भाग में दक्षिण के पठार के दोनों किनारों पर तटीय मैदान का विस्तार है। इस मैदान के दो भाग
हैं-पश्चिमी तटीय मैदान तथा पूर्वी तटीय मैदान । इसकी औसत ऊँचाई 10.60 कि०मी० के मध्य है। पाँचवें भाग में भारतीय मरुस्थल आता है जो राजस्थान के पश्चिम में स्थित है। यह 644 कि. मी. लम्बा तथा 160 कि. मी. चौड़ा है। इसका कुल क्षेत्रफल 104000 कि. मी. है। यह शुष्क
जलवायु वाला क्षेत्र है तथा यहाँ वर्षा 15 से.मी. से भी कम होती है। अंतिम भाग में द्वीप समूह आते हैं। इसके अंतर्गत 1256 द्वीप हैं । ये मुख्यतः दो समूहों में हैं। बंगाल की खाड़ी के द्वीप समूह में 572 द्वीप है, अरब सागर में 47 द्वीप हैं। इसके अंतर्गत गंगा सागर और महानदी के डेल्टा के अनेक द्वीप स्थित हैं।
अर्थात् भारत के प्राकृतिक विभाग अत्यधिक विषमताओं से परिपूर्ण है।

https://www.evidyarthi.in/